शोध संचयन

Half yearly, Bilingual (हिन्दी & English)
ISSN 0975 1254

Vol. 5, Issue 2, 15 July, 2014

**An Internationally Indexed Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research**

CHIEF EDITOR :
Dr. Yogendra Pratap Singh

EDITOR :
Dr. Sunita Singh

ASSOCIATE EDITORS :

Dr. Pradeep Kumar Rao
Dr. Amit Kumar Dwivedi

www.shodh.net

शोध संचयन

Vol. 5, Issue 2, 15 July, 2014

मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान पर केन्द्रित अर्द्धवार्षिक शोध जर्नल

Acknowledgement

It gives me immense pleasure to inform you that Centre of Indian Languages, School of Language, Literature & Cultural Studies, Jawaharlal University(JNU), New Delhi has ranked Shodh Sanchayan as a category "A" journal with maximum API score for both direct recruitment and promotions under CAS. These achievements have been gained due to your blessingSAnd consistent co-operation to our efforts in making Shodh Sanchayan a quality journal. We are thankful to JNU for their kind consideration also.

प्रकाशकीय कार्यालय :

B-9, द्वितीय तल, गगन अपार्टमेंट,
गगन विहार एक्सटेंशन, दिल्ली, 51
E-mail : shodhsanchayan@gmail.com
info@shodh.net

URL : www.shodh.net

संपादकीय पत्र व्यवहार :

डॉ० सुनीता सिंह, संपादक
409, शांतिवन अपार्टमेन्ट
2A/244A, आजाद नगर कानपुर- 208002
सम्पर्क :+919415050808

मूल्य : रु0 150ha-

SUBSCRIPTION FEE OF JOURNAL

Individual :

	One Year	ThreeYear	Five Year	Life*
Rs.	Not Available	800	1400	3000
US$	15	30	60	200

Institutional :

	One Year	ThreeYear	Five Year	Life*
Rs.	400	1100	1800	4000
US$	25	50	100	300

Bank Draft or Crossed Cheque (CBSB Branches for out station cheque) accepted in Favour of "**Shodh Sanchyan**" payable at **Kanpur**. Overseas subscribers can subscribe by electronic transfer. For detail visit **www.shodh.net.** Excluding Postage.

*Subscription fee may be revised according to Editorial Board Decision. Life subscription is for ten years or servival of the journal, which is less. Postage charge excluded.

नोट : प्रकाशित आलेखों के विचारों से सम्पादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। समस्त वाद क्षेत्र कानपुर होगा।

संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ0 सुनीता सिंह द्वारा शिवा प्रिंटिंग वर्क्स, A-21/11 नारायणा इण्डस्ट्रियल एरिया, फेस-II नई दिल्ली, 98 से मुद्रित कराकर B-9, द्वितीय तल, गगन अपार्टमेंट, गगन बिहार एक्सटेंसन, दिल्ली–51 से प्रकाशित

लेखकों से अनुरोध

शोध संचयन सामाजिक विषय एवं मानविकी का अर्द्धवार्षिक शोध-जर्नल है जिसमें उपरोक्त विषयों से संबींित सभी उपविषयों के मौलिक शोध-पत्र, शोध समीक्षा, विचार, लेखों आदि का प्रकाशन किया जाता है। शोधकर्ता हिन्दी अथवा अंग्रेजी भाषा में अपने शोध पत्र भेज सकते है।

शोध पत्र भेजते समय कृपया निम्न बिन्दुओं पर ींयान दें:-

1. शोध-पत्र अींिकतम 4000-5000 शब्दों तक में हो तथा 150 शब्दों का सार संक्षेप एवं विषय संकेतक (Key Words) भी प्रेषित करें। प्रचलित शब्दावली का व्यवहार अपेक्षित है।
2. संदर्भ ग्रन्थ सूची का उल्लेख अवश्य करें। संदर्भ ग्रन्थ सूची में लेखक का उपनाम, मुख्य नाम, पुस्तक का नाम, प्रकाशन का वर्ष एवं पृष्ठ संख्या अंकित होना चाहिए। पत्रिका के संदर्भ में लेख का शीर्षक, पत्रिका का नाम, अंक, पृष्ठ क्रम एवं प्रकाशन वर्ष दें।
3. शोध-पत्र A4 साइज के कागज पर कम्प्यूटर से एक तरफ मुद्रित हो।
4. शोध-पत्र एम.एस. वर्ड अथवा पेज-मेकर पर हिन्दी में Krutidev 10 के Font size 12 तथा अंग्रेजी में Times New Roman में Font size 10 में टाइप करवाकर भेजें।
5. ई-मेल द्वारा प्रपत्र भेजने पर भी आलेख **तीन प्रतियों में (Hard Copy)** तथा **सीडी में** अवश्य भेजें। जिससे प्रूफ रीडिंग सम्बनींी कमियों को दूर किया जा सके।
6. शोध-पत्रें की स्वीकृति एवं अस्वीकृति का अन्तिम निर्णय सम्बनिंीत विषय के दो विशेषज्ञों की राय से सम्पादक मण्डल द्वारा किया जाता है। इस सम्बनीं में अन्तिम अींिकार प्रींन सम्पादक को प्राप्त है जो सभी सदस्यों को मान्य होगा
7. शोध-पत्र के प्रकाशन हेतु सम्पादक के नाम पत्र होना चाहिए, जिसमें स्पष्ट रूप से शोध-पत्र के सम्बनीं में ''मौलिक एवं अप्रकाशित''शब्द लिखा होना चाहिए और उसे अन्यत्र न भेजे जाने की पुष्टि हो। www.shodh.net से सर्टिफिकेट ऑफ ओरिजिनलिटी प्राप्त करें और लेख के साथ भरकर भेजें।
8. शोध-पत्र में सारणी एवं चित्रें का प्रयोग लेख के बीच में न करते हुए अंत में संदर्भ या संलग्नक के रूप में करें।
9. शोध-पत्र ई-मेल द्वारा हमारे ई-मेल पते पर और डाक द्वारा निम्न पते पर भेजे जा सकते हैं-

shodhsanchayan@gmail.com
info@shodh.net

डॉ० सुनीता सिंह, संपादक शोध संचयन,
409, शान्तिवन अपार्टमेंट
2A/244A आजाद नगर, कानपुर-208002 (उ०प्र०)

अपने आलेख को लिखते समय कृपया ध्यान दें:-
(शोध आलेख में होने वाली सामान्य त्रुटियाँ)

1. आलेख में नई एवं मौलिक उद्भावनाओं/अवींारणा के प्रतिपादन का अभाव एवं पूर्व स्थापित अवींारणा/मान्यता, स्थ. ापना आदि का पिष्टपेषण
2. शोध आलेख का तार्किक एवं श्रृंखलाबद्ध न होना और शब्दजाल की अनावश्यक उपस्थिति।
3. संदर्भ साहित्य का अपर्याप्त अध्ययन।
4. त्रुटिपूर्ण तथ्यों एवं आँकड़ों का उल्लेख
5. पाठ में उल्लिखित संदर्भ का लेख के अन्त में दी गयी संदर्भ सूची में न लिखा जाना
6. संदर्भ में पुस्तक के संस्करण का न लिखा जाना
7. पाठ में व्याकरणिक त्रुटियों का होना
9. वाक्य में काल का असंगत होना
10. प्रस्तुति में असंगतता
11. लेखक के द्वारा आलेख शुद्ध करते समय शब्द/पद/वाक्य का लोप हो जाना
12. लेख का अपेक्षाकृत बड़ा हो जाना
13. विषय प्रतिपादन में विषय का अस्पष्ट होना
14. तथ्यों, भावों या विचारों की पुनरावृत्ति

Abstract:-

The researchers must give Abstract of their papers/Articles. It must be concise, clear and perfect in itself and should not be the repetition of paragraphs given research papers.

शोध सारांश :-

अनुसंध्ता द्वारा अपने शोध पत्र/शोध आलेख को आलेख सार (Research Article Abstract) अधिकतम 150 शब्दों में अवश्य दिया जाये। आलेख सार बनाते समय इस बात का ध्यान रखा जाये कि वह अपने आप में संक्षिप्त, स्पष्ट एवं पूर्ण हो तथा मूल शोध आलेख के अनुच्छेदों की पुनरावृत्ति न हो।

Key Words :-

Keywords of research paper/article must be given at the beginning of the paper. It should not be in more than 5 words.

विषय संकेत :-

शोध पत्र/लेख के विषय का सम्पूर्ण परिचय प्रस्तुत करने वाले शब्दों को अवश्य दें। इनकी संख्या पाँच से अींिक नहीं होनी चाहिए।

Be Research Journalist

Be a Research Journalist and join us. Send research based News, information, reports and photographs of Seminars etc.

Research flourishes through publication & efficient academic networking.

PATRON :

Dr. Nagendra Swaroop, *D. Litt., Secretary, Board of Management, Dayanand Shiksha Sansthan, Kanpur*
Prof. Ram Achal Singh, *Ex. V.C., R.M.L.A. Univ., Faizabad, Ex. Chairman, UPHESC, Allahabad*
Prof. Narendra Kohali, *Eminent Hindi Writer, Delhi*
Prof. Achutanand Mishra, *Ex. V.C., M.L.C.Patakarita Vishwavidyalaya, Bhopal*
Prof. Gyanendra Singh, *Ex.V.C., M.G.C.G. Vishwavidyalaya, Chitrakoot, Satana*
Prof. K.B. Pandey, *V.C., M.G.C.G. Vishwavidyalaya, Chitrakoot, Satana,Ex. Chairman, UPPSC, Allahabad, Ex. V.C.,C.S.J.M. Univ., Kanpur*
Prof. A.D.N. Bajpai, *Ex.V.C.,A.P.S. University, Rewa., Ex.V.C., M.G.C.G. Vishwavidyalaya, Chitrakoot, Satana*
Dr. P.V.Shrikrishan Bhatt, *Ex. Principal & Member of Peear's Committee, NAAC, Banglore*
Sri. Suresh Chandra Shukla, *Editor,'Spial', Norway*
Sri. R.P. Goel, *Ex. Adv. Gen., U.P. Govt., Allahabad*

EDITORIAL ADVISORY BOARD :

Prof. Dasharath Dwivedi, *Ex. HOD, Sanskrit, D.D.U.G. University, Gorakhpur*
Prof. Surendra Dubey, *HOD, Hindi, D.D.U.G. University, Gorakhpur*
Prof. Sadanand Prasad Gupta, *Editor, 'Samanvaya', Gorakhpur*
Prof. Shanti Shri Pandit, *Dept. of Politics & Public Administration University of Pune, Pune*
Prof. R.C. SinhA, *Retd. Prof & Head, Dept. of Philosophy, Patna University, Patna*
Prof. Y.P. Singh, *Ex. HOD, Hindi. Alld. University, Allahabad*
Prof. N.N. Pandey, *Ex. Director, Kendriya Hindi Sansthan, Agara,Education, Assam Univ.Silture*
Prof. Rakesh Mishra, *Dept. of Buddhist Studies, University of Jammu, Jammu*
Prof. Geeta Sharma, *Lal Bahadur Shastri Administrative Academy, Mussoorie, Ex. Visiting Prof., Osak University, Japan*
Prof. Shushma Yadav, *Prof. of Ambedkar Chair, Indian Institute of Public Administration, New Delhi, Pro. V.C., IGNOU, New Delhi*
Prof. Bhagwat Singh, *Ex. Principal, Hari Ram Degree College, Mairwa, Chapara*
Prof. Haribhakt Neopani, *Eminent Writer, Tribhuwan University, Kathmandoo, Nepal*
Dr. Ajai Prakash, *Ex. HOD, Hindi, D.A-V. College, Kanpur*
Prof. Nand Kishore Pandey, *Prof.,Dept. of Hindi, Rajasthan Univ., Jaipur*
Dr. Lalit Singh, *Dept. of Humanities, Registrar, M.G.C.G. Vishwavidyalaya, Chitrakot, Satana*

CHIEF EDITOR :
Dr. Yogendra Pratap Singh
Dept. of Hindi, D.A-V. College, Kanpur

EDITOR :
Dr. Sunita Singh
Dept. of M.Ed., V.S.S.D. College, Kanpur

NEWS EDITOR :
Dr. Ramesh Verma, *Senior Journalist, Dept. of Hindi, D.A-V. College, Kanpur*

EXECUTIVE EDITOR :
Dr. Tribhuwan Singh, *Principal, B.A.D. College, Ballia*
Dr. Bipin Chandra Kaushik, *Dept. of Pol. Science, D.B.S. College, Kanpur*

ABSTRACT EDITOR :
Dr. Raj Saran Shahi, *Dept. of Education, Budh P.G. College, Kushinagar*

ASSOCIATE EDITOR :
Dr. Pradeep Kumar Rao, *Principal, M.P. Degree College, Gorakhpur*
Dr. Amit Kumar Dwivedi, *Entrepreneurship Development Institute of India(EDII), Ghndi Nagar, Gujrat, Ex. Fellow, IIM, Ahmadabad*

HINDI LANGUAGE EDITOR :
Dr. Siddhrtha Shankar, *Hindi, J.P.University, Chapara, Bihar*

ENGLISH LANGUAGE EDITOR :
Dr. Suman Singh, *Dept. of English, P.P.N. College, Kanpur*

TRANSLATION EDITOR :
Dr. Rajendra Prasad Pandey, *Dept. of Translation Studies, I.G.N.O.U., Dehli*

CONVENER & CO-CONV. REVIEW COMMITTEE :
Dr. Arun Kumar Singh, *Dept. of Philosphy, D.A-V. College, Kanpur*

COUNCIL OF EDITORS :

Dr. N.D. Dwivedi, *Dept. of Extension Education, M.J.P.R. Univ., Bareilly*
Dr. Ram Chandra, *Dept. of Hindi, J.N.U., Delhi*
Dr. A.K.Singh, *Head., Institute of J & M.C., C.S.J.M. Univ., Kanpur*
Dr. Ravi Shankar, *Dept. of Geography, B.H.U., Varanasi*
Dr. Kusum Singh, *Dept. of Humanities, M.G.C.G. Vishwavidyalaya, Chitrakot, Satna*
Dr. Jacob Kurion, *Professor of International Economics at the Johns Hopkins University Center for Advanced International Relations (SAIS) in Nanjing, China.*
Dr. Shamim Ahmad, *Department of Education, Maulana Azad National Urdu University, Hyderabad*
Dr. G.L.Srivastava, *Principal, Armapore Degree College, Kanpur*

Dr. **Jai Veer Singh,** *R.M.P.P.G., College, H.O.D, Hindi, Sitapur*

Dr. **Pawan Agrawal,** *Dept. of Hindi, Lucknow Univ., Lucknow*

Dr. **Sanjay Singh,** Sec. U.P.H.E.S.C., Allahabad

Dr. **Niranjan Barnwal,** Dept. Of Hindi, Delhi Univ., Delhi, Ex. Prof., *Centre for South East Asian Language Study, California University, California, U.S.A.*

Dr. **Kashi Nath Neopani,** *H.O.D., Budh Philosophy, Valmiki Campus, M.S.Viswavidyalaya, Kathmandu, Nepal*

Dr. **Nityanand Srivastava,** *Dept. of Hindi,C.G.N.P.G. College, GolaGok ran, Lakhimpur*

Dr. **Krishna Kanti Dixit,** *Dept. of Hindi, D.A-V College, Kanpur*

Dr. **Aneeta,** *Dept. of P.G. Hindi, JP Uni. Chapara*

Dr. **Vibha Singh,** *Dept. of Hindi, D.A-V College, Kanpur*

Dr. **Mahesh Diwakar,** *President, Akhil Bhartiya Sahitya Kala Manch, Mooradabad*

Dr. **Gayatri Singh,** *HOD., Hindi, Armapore Degree College, Kanpur*

Dr. **N.Papa Rao,** *K.P.G. College, Bhilai, Durg, Chattisgarh*

Dr. **Ajai Bhupendra Jaiswal,** *Dept. of Law, V.S.S.D. College, Kanpur*

Dr. **Anoop Kumar Singh,** *Sociology, D.A-V., College, Kanpur*

Dr. **Raj Narayan Shukla,** *Dept. of Hindi, S.D.P.G. College, Ghziabad*

Dr. **Hardeep Singh Negi,** *H.O.D. Hindi, S.C.D. Govt. P.G. College, Ludhiyana*

ASISTANT EDITOR :

Dr. Raj Shree Chaturvedi
Dept of Pol. Science., D.A-V.College, Kanpur

Dr. Jyoti Yadav
Dept of English, K.M. Govt. College, Ghziabad

Vikas Mishra
Department of B.Ed., Akbarpur Degree College, Kanpur Dehat

Sarveswar Ram Mishra
Dept. of History, D.A-V. College, Kanpur

Vishakha Pandurang Mhaske
Lect., B.Ed. & M.Ed. College of Education, Shri Sharda Bhavan Education Society Nanded (Maharastra)

Publication Office-in-charge :
Suraj Singh, *New Delhi*

Shyamu Kashyap
Editorial staff

LEGAL CELL :

Manish Goyal, *Advocate, Allahabad*
Sanjai Singh Bisen, *Advocate, S.C., New Delhi*
K.K.Singh, *Advocate, H.C., Allahabad*
Ratneswar Pandey, *Advocate, H.C., New Delhi*

ACKNOWLEDGEMENT :

Dr. Rekha Sharma
Principal, D.A-V. College, Kanpur

Sri A. K. Yadav
Asst. Commisnor, Income Tax, New Delhi

सभी सम्पादकीय दायित्त्व पूर्णतः अवैतनिक है।

Special Issue
- विशेष अंक -

Indian Literature & Modern Discipline
भारतीय वाङ्मय और आधुनिक ज्ञानानुशासन

भारतीय वाङ्मय में आधुनिक ज्ञानानुशासनों के पर्याप्त प्रमाण मिलते है। अमरकोश आधुनिक थिसारस का पूर्वज है। भरतमुनि का नाट्यशास्त्र दुनिया का प्राचीनतम मीडिया का शास्त्र है। चाणक्य का अर्थशास्त्र राजनीतिविज्ञान का आधारभूत ग्रंथ है। .... आदि ऐसे अनेक प्रसंग है। जिनका संबंध आधुनिक ज्ञानानुशासन से है। आधुनिक संदर्भों में भारतीय वाङ्मय पर आधरित शोध आलेख आमंत्रित है।

Information Technology & Modern Discipline
सूचना प्रौद्योगिकी और आधुनिक ज्ञानानुशासन

सम्प्रति सूचना प्रौद्योगिकी का युग है। सूचना प्रौद्योगिकी और मीडिया की उपस्थिति से विश्व व्यवस्था में आमूल परिवर्तन घटित हुआ है। सूचना प्रौद्योगिकी ने न केवल व्यवस्था को बदला है वरन् विचार और दृष्टि को भी बदला है। इस नवीन क्राँति के हस्तक्षेप से शैक्षिक अनुशासनों में अभूतपूर्व बदलाव आए है। इस क्राँति से विभिन्न शैक्षिक अनुशासनों में आने वाले बदलावों को रेखा कित करने वाले सूचना प्रौद्योगिकी एवं विभिन्न विषयों के अन्तरानुशासनात्मक मौलिक शोध आलेख आमंत्रित हैं।

सम्पादकीय

शोध विशेषज्ञता अर्जित करने के साथ-साथ विषयों के परे जाने की भी यात्रा है।

शोध समस्या मूलक होते हैं। जब हमारी तार्किक बुद्धि किसी समस्या का समाधान ढूँढ़ने का प्रयास करती है तो अपने पूर्व अर्जित ज्ञान की श्रृंखला से जुड़ती है। उस विषय विशेष के संदर्भ में संपन्न सभी प्रकार के उपलब्ध ज्ञान का अवलोकन करती है जिसे हम शोध की शब्दावली में संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण (Review of Literature) कहते है, वह पुनः उस ज्ञान तंत्र में अपने समाधान ढूँढ़ती है। समाधान न मिलने पर ही वह शोध की यात्राा में संलग्न होता है अर्थात समस्या का समाधान न मिल पाना ही हमारी शोध यात्रा का मुख्य प्रस्थान बिन्दु है। इसके पूर्व का सारा प्रयास वस्तुतः शोध नहीं है, बल्कि अपनी अज्ञानता को मिटाना है। शोध समस्या किसी भी शोधार्थी के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है। वास्तव में बिना शोध समस्या के न तो अच्छा शोध आलेख लिखा जा सकता है और न ही अच्छा डिजर्टेशन या शोध प्रबन्ध शोध समस्या की महत्ता को सीपी में बनने वाले मोती की प्रक्रिया से भली-भाँति समझा जा सकता है। मोती सीपी के पेट में बनता है, जो सीपी के लिए समस्या बन जाता है और वह उसे अनवरत खलता रहता है। उस बाह्य कण के खुरदुरेपन से सीपी के अन्तस् का कोमल संसार सदैव मुक्ति चाहता है, फलतः उस बाह्य कण के चारो तरफ कैल्शियम के लवण द्रव्य को स्रवित करता है और अन्त में उस छोटे बाह्य आरोपित कण के ऊपर, गोल आकृति में जमते-जमते एक मोती रूपाकार होता है। उसी प्रकार एक स्कॉलर के लिए कोई आपातिक बौद्धिक समस्या होती है जिसके समाधान हेतु वह निरंतर प्रयत्नशील रहता है, उस समस्या के समाधान हेतु उसके अध्ययनरत रहने पर, शोध की प्रक्रिया से हल मिलता है, जो अपनी तार्किक संरचना के बल पर, मोती सदृश उसे महत्त्वपूर्ण निष्कर्षों पर पहुँचाता है, जिसे हम शोध का परिणाम कह सकते हैं। यह शोध ज्ञान परम्परा में उसी प्रकार अपनी आभा विखेरता है जिस प्रकार मोती सदैव अपनी लावण्य और कांति के लिए जाना जाता है।

शोध की यात्रा सूक्ष्म स्तर पर शोधार्थी को उस समस्या के सन्दर्भ में विशेषज्ञ बनाती है जिस तरह एक टार्च से निकली किरणें कुछ नियम पर केन्द्रित होती हैं और उसके भौतिक आयामों को उद्भासित करती है। उसी प्रकार एक अच्छा शोध अपनी शोध समस्या का पूर्ण समाधान प्रस्तुत कर देता है। शोध समस्या फिर समस्या नहीं रह जाता जिस तरह प्रकाश स्तंभ के जलने पर तिमिर का समाप्त हो जाना ही उसकी सार्थकता है। सम्यक प्रविधि से किया गया शोध भी शोध समस्या से प्रारंभ होता है, किन्तु उसे पूर्ण समाप्त भी करता है। वह एक पथिक द्वारा अविष्कृत मार्ग है जो उस पथिक को राहों का अन्वेषी बना देता है। उस राही की दृष्टि अन्वेषी होती है। इस तरह शोधार्थी अपनी शोध समस्या संदर्भित विषय का, सूक्ष्म स्तर पर विशेषज्ञ सा हो जाता है। उसकी यह विशेषज्ञता माइक्रो लेवल की होती है। सामान्य या बृहत् स्तर पर वह अपने शोध कार्य के दौरान, अन्य संबंधित विषयों को छोड़ता जाता है। उसे अर्जुन के द्वारा लक्षित मछली की आँख की तरह केवल अपनी शोध समस्या ही दिखाई देती है।

किसी विशेष समस्या के संदर्भ में किया गया शोध जिस प्रकार सूक्ष्म स्तर पर विशेषज्ञता की यात्रा है उसी प्रकार यह वृहत स्तर पर ज्ञान के क्षेत्र में विषय से परे की भी यात्रा है। बहुत से दीप अथवा प्रकाश स्तंभ समेकित रूप में पूरे परिवेश को प्रकाशित करते हैं। सूक्ष्म स्तर पर प्रकाश स्रोत एक सीमा में, चीजों को सूक्ष्म रूप से पूरी तरह प्रकाशित कर देता है, किन्तु अपने विस्तार में बृहत् तौर पर उजाला फैलाने के लिए जाना जाता है। उसी प्रकार एक अच्छा शोध केवल अपने समस्या क्षेत्र से ही संबंधित नहीं रहता, वह उपनी सीमा विस्तार में अंतर्विषयी होता है और व्यापक स्तर पर विषय / अनुशासन से परे हो जाता है। दूसरे शब्दों में कहें तो किसी एक विशेष शोध समस्या से प्रारंभ किया गया शोध सम्पूर्ण मानवता की प्रबुद्ध चेतना को विस्तृत करता है। ज्ञान को विस्तृत करता है। इस प्रकार शोध एक तरफ सूक्ष्म स्तर पर विशेषज्ञता अर्जित करना है तो दूसरी ओर व्यापक स्तर पर यह अर्न्तविषयी से होते हुए विषयों से परे जाने की यात्रा करता है। शोध की पश्चिमी परंपरा जो केवल विशेषज्ञता तक ही रुक जाती है वहीं, भारतीय शोध की परंपरा उसे बृहत्तर आयाम से जोड़ती है। यही कारण है कि भारतीय परंपरा में ज्ञान को मुक्ति का साधन माना गया है। भारतीय ज्ञान परंपरा में अलग-अलग शैक्षिक अनुशासनों, विषयों की समग्रता में वाङ्मय की संज्ञा मिली है जिसका अंग्रेजी या पश्चिमी भाषा से मिलना कठिन है। ऐसे में संम्पूर्ण ज्ञान को सामाजिक विज्ञान और मानविकी में विभाजित करके देखना, बेमानी है। ज्ञान के इस धरातल पर विषयों का वर्गीकरण निरर्थक सिद्ध होने लगता है। उसका संकलन उन सभी विषयों की ओर होने लगता है जो शोधार्थी की शोध समस्या से संबंधित होते है। फलतः उसके लिए शैक्षिक अनुशासनों की दीवारें स्वतः विलीन होने लगती हैं। इसके उच्च्च धरातल पर उसकी समस्या और देखने की दृष्टि दार्शनिक हो जाती है। सभी शैक्षिक अनुशासन उसी तरह एक में विलीन प्रतीत होते हैं जैसे सभी नदियाँ सागर में जाकर मिल जाती हैं।

–प्रमुख संपादक

शोध संचयन

Vol. 5, Issue 2, 15 July, 2014

अनुक्रम

पृष्ठ

लेखकों के लिए निर्देश ....(III)

शोध विशेषज्ञता अर्जित करने के साथ-साथ विषयों के परे जाने की भी यात्रा है।
सम्पादकीय ....(VI)

शोध विमर्श

खण्ड-१ समाजविज्ञान

राष्ट्र की अवधारणा और आधुनिक राष्ट्रवादी : बंकिमचन्द्र चटर्जी के विशेष सन्दर्भ में
डॉ. पवन कुमार शर्मा
.....Page-10

A Study Of Branding Strategies Towards Osmetic Industry - An Indian Women Concentric Approach
Dr. V. K.Goswami
..... Page-16

अथर्ववेद में आयुर्वेद
डॉ. विष्णु प्रसाद शर्मा
.....Page-25

Gender Equality, Mass Media
Dr. Gopal Singh
..... Page-27

A Cross – Regional Study Of Terminal Values And Moral Judgement Of Tribal And Non – Tribal Secondary School Children
Dr. Anil Panda
..... Page-31

Contribution Of Private Companies Towards Corporate Social Responsibility
Dr. Audhesh Kumar &
Sakshi Varshney
..... Page-34

Waste Disposal Challenges And Its Impact On Human Health And Environment In Kanpur Metropolis
Dr. Manjulata Singh & Dr. G. L. Srivastava
.... Page-38

कुरमियों के गोत्र का ऐतिहासिक विश्लेषण : झारखण्ड के विशेष सन्दर्भ में
अशोक कुमार महतो
.....Page-42

भारत-बाँग्लादेश संबंधों में बाधा : कट्टरपंथी समूह
गीतांजलि चन्द्राकर
.....Page-46

FDI In Indian Retail Industry : Challenges & Prospects For Agrarian Economy
Dr. Vandana Dwivedi
..... Page-49

A Study Of Girls As Beneficiaries Of School Education In Bundelkhand Region Of Uttar Pradesh
Varsa Jain
..... Page-54

Socio-Religious Relations In Allahabad During Festive Seasons (1919-1928)
Dr.Vinita Mishra
..... Page-58

A Study Of Perspective Of Stakeholders On The Role Of Ncte In Maintaining Quality Of Teacher Training Programme
Dr. Saurabh Kumar
..... Page-62

बिहार में अन्तरिम सरकार (१९३७-१९३९) की कृषक नीति तथा कृषक आन्दोलन
डॉ० सुधा कुमारी
.....Page-66

A Study Of Scholastic Achievement Of High And Low Creative Students
Dr. Shobha Chaturvedi &
Sumati Shukla
..... Page-68

ज्योतिर्विज्ञान की सीमाएँ : एक गवेषणात्मक अध्ययन
डॉ. संजय कुमार सिंह
.....Page-71

विज्ञान एवं तकनीकि और गढ़वाल हिमालय की महिलायें
शालिनी श्रीवास्तव
.....Page-77

सामान्य तथा मधुमेह से ग्रसित महिलाओं तथा पुरुषों में सुरक्षा-असुरक्षा की भावना का तुलनात्मक अध्ययन
डॉ. रन्जू कुशवाहा
.....Page-80

◆◆◆

Special Issue
- विशेष अंक -

Indo-Nepal Relation

भारत-नेपाल संबंध

भारत-नेपाल संबंध के विविध पक्षों को अन्वेषित करने वाले सर्वथा अप्रकाशित, मौलिक शोध आलेख आमंत्रित है। शोध आलेख निम्न किसी भी विषय अथवा संबंधित अन्य विषय पर केन्द्रित हो सकता है-

1. भारत-नेपाल सम्बन्ध : सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक यात्रा।
2. भारत-नेपाल सम्बन्धों के निर्धारक कारक।
3. नेपाली-अर्थव्यवस्था में भारत की भूमिका।
4. नेपाल की आन्तरिक स्थिरता और राजशाही।
5. नेपाल में लोकतांत्रिक व्यवस्था की भूमिका।
6. भारत-नेपाल सम्बन्धों पर चीन का प्रभाव।
7. नेपाली अर्थव्यवस्था में चीन की भूमिका।
8. नेपाल में आन्तरिक अशांति के कारक।
9. माओवादी आन्दोलन का नेपाल के राजनैतिक एवं सामाजिक परिदृश्य पर प्रभाव।
10. भारत व नेपाल के माओवादियों का अन्तरसम्बन्ध।
11. नेपाल सेना : चुनौतियाँ और सन्न)ताएं।
12. नेपाल की वर्तमान चुनौतियाँ और भारत के लिए नीतिगत विकल्प।
13. नेपाल चीन सम्बन्ध और भारत।
14. भारत की आन्तरिक एवं बाह्य सुरक्षा और नेपाल।
15. नेपाल से अवैध आव्रजन की समस्या और भारतीय सुरक्षा।

An honest warning to research contributors

The writing of research papers is a very common phenomenon in the academic world. But now-a-days this is done without giving due care to the norms and ethics accepted for writing research papers. Even a small mistake spoils the reputation of the concerned person. We come across several stories of the violation of accepted norms. With the help of Electronic Editing, it is very common to cut ,copy and paste in Research article / thesis formation without giving a reference of the original work. We should always keep in mind that it is not a fare practice. While reviewing, sometimes we come across such malpractices. Such stories suggest that research scholars must be very honest and sincere in their work and must give proper attribution in case they quote any content from any original work.

Editor

Key-points which you have to keep in mind

Your research article is no doubt relevant and important. But we are need of your help.
Please review your article according to our specified format and send it.
There are certain key-points which you have to keep in mind-
*Article must have any research problem.
**Title of the research article should reflect research problem.
*** Research Abstract about research work should be presented in max. 100 words.
**** Abstract:- Abstract of the paper/Articles must be concise, clear and perfect in itself and should not be the repetition of paragraphs from given research papers.

शोध सारांश:-

अनुसंधाता द्वारा अपने शोध पत्र/शोध आलेख का सारांश अधिकतम 100 शब्दों में दिया जाना अपेक्षित है। आलेख सार बनाते समय इस बात को ध्यान में रखा जाना अपेक्षित है कि वह अपने आप में संक्षिप्त, स्पष्ट एवं पूर्ण हो तथा मूल शोध आलेख के अनुच्छेदों की पुनरावृत्ति न हो।

* Approx. 5 keywords for online searching the article
Key Words:-

Keywords of research paper/article must be given at the beginning of the paper. It should not to be in more than 5 words.

विषय संकेत :-

शोध पत्र के विषय का सम्पूर्ण परिचय प्रस्तुत करने वाले कुछ शब्दों को अवश्य दें, जिससे आपके आलेख को इन्टरनेट पर सहजता से खोजा जा सके।

*References should be proper, relevant and abundant.
References must be in end-note style as given bellow-
Author's name, Book's name, Publisher, Place, Year, Page no.

Acknowledgement

It gives me immense pleasure to inform you that Centre of Indian Languages, School of Language, Literature & Cultural Studies, Jawahar lal University(JNU), New Delhi has ranked Shodh Sanchayan as a category "A" journal with maximum API score for both direct recruitment and promotions under CAS. These achievements have been gained due to your blessingSAnd consistent co-operation to our efforts in making Shodh Sanchayan a quality journal.